जैन विश्व भारती-समण संस्कृति संकाय, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2014-2015

7 अ

जैन विद्या - भाग - 7

(भिक्षु विचार दर्शन)

समय : 3 घण्टे | प्रश्न पत्र : प्रथम | पूर्णांक 100

नोट- पिछले कोर्स से 15 नम्बर के प्रश्न इस प्रश्न पत्र में पूछे जा सकते हैं।

(A) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर अतिसंक्षेप में दें। 10×1=10

1. साधु समुदाय के लिए कौनसे तीन शब्द व्यवहृत होते हैं?
2. शब्द ज्ञान को प्रमाण मानने का लाभ क्या है?
3. राज्य एवं धर्म का मूलमंत्र क्या है?
4. सुख की प्राप्ति के उपाय क्या है?
5. हिंसा और अहिंसा का मूल स्त्रोत क्या है?
6. धर्म शासन का रूप कब ले लेता है?
7. हरिभद्र सूरि ने किस रचना के माध्यम से चैत्यवासियों के कर्तव्यों का विरोध किया?
8. व्यक्ति में सबसे बड़ा बल किसका होता है?
9. गण व्यवस्था के कोई चार सूत्र बताइए।
10. प्राचीन समय में साधु-संत के कितने और कौन-कौन से पद थे।
11. आचार्य भिक्षु के अनुसार धर्म और अधर्म की कसौटी क्या है?

(B) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दें। 10×2=20

1. आचार्य के निर्वाचन में किन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता है?
2. आवश्यक हिंसा के बारे में महात्मा गाँधी के विचार लिखें।
3. चिंतन की दो धाराएं कौनसी है उनका साध्य क्या है?
4. अवीतराग की पहचान किन सात बातों से होती है?
5. आचार्य भिक्षु ने साधु-असाधु को क्या पहचान बताई।
6. सोने के लिए जागने वाले बहुत होते हैं, पर जागरण के लिए जागने वाले विशेष ही होते है-आचार्य भिक्षु से संबंधित घटना बताएं।
7. धर्म क्यों अलौकिक है?
8. दाक्षणिक बंध क्या है?
9. करण योग किसे कहते हैं?
10. जोधपुर के राजा विजयसिंह के मंत्री की प्रशंसा का उत्तर आचार्य भिक्षु ने

किस पद्य में दिया?

11. आचार्य भिक्षु ने तम्बाकु सूंघने वाले साधुओं के लिए क्या मर्यादा बनायी?

(C) किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर दें। 8×5=40

1. लौकिक कर्त्तव्यों और लोकोत्तर कर्त्तव्यों को एक मानने पर मोक्ष के सिद्धांत पर प्रहार होता है। आचार्य भिक्षु के इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट करें।
2. पुण्य के लिए धर्म किया जाए या नहीं। इस संदर्भ में आचार्य भिक्षु का मंतव्य स्पष्ट करें।
3. एक महाव्रत टूटने से सभी महाव्रत टूट जाते हैं। महाव्रतों के टूटने का क्रम स्पष्ट करें।
4. आचार्य भिक्षु ने गण की व्यवस्था में भगवान महावीर के किन आठ सूत्रों को क्रियान्वित किया?
5. आचार्य भिक्षु नैसर्गिक प्रतिभा के धनी थे। स्पष्ट करें
6. आग्रह से मुक्ति कैसे संभव है? समझाएं।
7. धर्म और पुण्य पृथक-पृथक है। समझाएं।
8. अहिंसा में जीव रक्षा हो सकती है पर अनिवार्य नहीं। कोई एक दृष्टान्त से समझाओ।
9. मर्यादा को समझाते हुए उसका मूल्य बताइए।

(D) किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें। 3×10=30

1. जैन धर्म को वर्तमान समय के संदर्भ में क्या आचार्य भिक्षु की मर्यादाओं की आवश्यकता है? हां तो क्यों?
2. किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिए।
   (1) धर्म और पुण्य (2) दया (3) दान
   (4) अनुशासन और संयमी (5) आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए
3. प्रवृत्ति और निवृत्ति का प्रयोग सापेक्ष दृष्टि से किया जता है। विस्तार से समझाइए।
4. आचार्य भिक्षु ने अनुशासन को जितना महत्व दिया है उतना ही स्वतंत्रता का भी सम्मान किया है-व्याख्या करें।